इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति
एक शिशु
की
विरह वेदना
- अनिरुद्ध दासाधिकारी
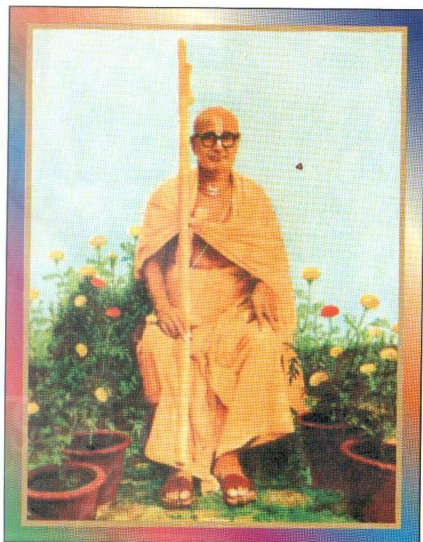
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद्

भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज

(श्रीअनिरुद्ध प्रभु जी के श्रील गुरुदेव)

एक शिशु की विरह–वेदना

इसी जन्म में भगवद्-प्राप्ति

श्रीरूपगोस्वामी के अनुगत एवं उनके प्रियजन, विष्णुपादपद्मस्वरूप,
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद्भक्तिदयित
माधव गोस्वामी महाराज के अनुगृहीत

अनिरुद्ध दासाधिकारी

मूल प्रस्तुति :
परम भागवत, श्रीहरिनामनिष्ठ, श्रीमद् अनिरुद्धदास अधिकारी
कृपा आशीर्वाद: त्रिदण्डिस्वामी श्रीश्रीमद् भक्तिसर्वस्व निष्किंचन महाराज

संपादक :
हरिपददास

प्रकाशक :
अखिल भारतीय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ संस्थान का शिष्य-समूह

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियां

प्राप्ति स्थान :

- श्री ओंकार सिंह शेखावत (अनिरुद्धदासाधिकारी)
  गाँव पाँचूडाला (छींड की ढाणी) वाया राजनोता
  तहसील कोटपुतली, ज़िला जयपुर, राजस्थान (भारत)
  दूरभाष : 01421-217059, मोबाइल नंबर - 09950629044
- श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ, सैक्टर 20-बी, चण्डीगढ़ (भारत)
  फोन नंबर : 0172-2708788
- श्री हरिनाम प्रेस, हरिनाम पथ, लोई बाजार, वृन्दावन (भारत)
  फोन नंबर : 0565-2442415, 2443415
- श्री हरिपददास अधिकारी, चंडीगढ़, मोबाइल नंबर - 09914108292
- श्री रमेश जी, जयपुर, मोबाइल नंबर - 09414045053

और अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :
हरिपददास, मोबाइल नंबर 09914108292

मुद्रण-संयोजन :
श्री हरिनाम प्रेस, हरिनाम पथ, लोई बाजार, वृन्दावन -281121 • 07500987654

समर्पण

परमकरुणामय एवं अहैतुक कृपालु
अस्मदीय श्रीगुरुपादपद्म, नित्यलीलाप्रविष्ट
ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिदयित माधव
गोस्वामी जी महाराज जी की प्रेरणा से ही
यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ है।

श्रीगुरुपादपद्म की अपनी ही वस्तु, उन्हीं के लिये,
उन्हीं के परम प्रिय शिष्य एवं अखिल भारतीय
श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के वर्तमान आचार्य, परमाराध्यतम,
ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी
जी महाराज के करकमलों में,
उनकी 88वीं शुभ आविर्भाव-तिथि,
श्रीरामनवमी, एक अप्रैल 2012 को सादर,
सप्रेम समर्पित

विषय सूची

छींड की ढाणी का संत

नमो नामनिष्ठाय श्रीहरिनाम प्रचारिणे।
श्रीगुरु-वैष्णव प्रिय-मूर्ति, अनिरुद्धदासाय ते नमः।।

प्रभु प्रेमीजनो! जय श्रीराधे। इस पुस्तक के रचयिता श्रीमद् अनिरुद्धदास अधिकारी (प्रभुजी) नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य 108 श्री श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी जी महाराज के अतिप्रिय शिष्य हैं और गत 60-वर्षों से श्रीहरिनाम कर रहे हैं। अपने श्रील गुरुदेव की कृपा से इन 60 वर्षों में, वे 300 करोड़ से भी ज्यादा हरिनाम श्रील गुरुदेव द्वारा दी गई माला पर कर चुके हैं। उनके दोनों हाथों में भगवान् के आयुधों के छः चिन्ह हैं जिसे कोई भी देख सकता है। गत 7-8 वर्षों से वह नित्यप्रति तीन लाख हरिनाम करने के साथ-साथ 600 से भी अधिक पत्र केवल एक ही विषय पर लिख चुके हैं। 80 वर्ष से भी अधिक की आयु में इतना कुछ कर पाना किसी आश्चर्य से कम नहीं। आज भी उनकी आँखों की रोशनी एक नवयुवक जैसी है, मुख में पूरे दाँत हैं और शरीर स्वस्थ है। वे कहते हैं - 'मैं तो एक गँवार हूँ। मेरे पास न बल है, न बुद्धि है, न विवेक है, जो हो रहा है, मेरे श्रील गुरुदेव की शक्ति है। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है।'

एक सद्गृहस्थ के रूप में, अपने परिवार में रहकर, अपनी ज़िम्मेवारियों को निभाते हुए, इस दिव्य अवस्था को प्राप्त करना, कोई मामूली बात नहीं है। एक सरल, निर्मल और प्रेम से भरपूर हृदय वाले ऐसे परमवैष्णव, परमभागवत को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम्।

हर वक्त जप रहे हैं जो, मधुर-मधुर कृष्ण नाम।
छींड की ढाणी के संत तुमको, कोटि-कोटि प्रणाम्।।

मैं गत तीन साल से उनकी कृपा प्राप्त कर रहा हूँ। उनके लगभग सभी पत्र मुझे प्राप्त हो चुके हैं। उनके पत्रों पर आधारित 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' के चार भाग हिन्दी भाषा में छप चुके हैं। लगभग नौ हज़ार पुस्तकों का वितरण गत दो वर्षों में हो चुका है जिन्हें पढ़कर हज़ारों लोग हरिनाम करने में लगे हैं। जो पहले से कर रहे थे, वे एक लाख या इससे भी अधिक हरिनाम

कर रहे हैं। 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' के पहले भाग का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद हो चुका है। श्री हरिनाम की कृपा से यह ग्रंथ आपको वर्ष 2012 में मिल सकेगा, ऐसी आशा है।

मेरे शिक्षा गुरुदेव! अनिरुद्ध प्रभु जी गत तीन वर्षों से हर रविवार को मोबाइल फोन द्वारा भक्तों को हरिनाम सुनाते हैं और लगभग एक घंटे के इस कार्यक्रम के अंत में अपने श्रील गुरुदेव द्वारा लिखाये गये पत्र भी पढ़ते हैं। वे कहीं भी रहें, यह कार्यक्रम कभी भी बंद नहीं हुआ। उनकी गारंटी है कि जो इस कार्यक्रम को 80 प्रतिशत सुनेगा, उसको 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' अवश्य होगी क्योंकि यह कार्यक्रम श्री श्रीराधामाधव एवं श्रील गुरुदेव के आदेश से अक्षय तृतीया सन् 2009 को शुरु हुआ था। इस कार्यक्रम की सी.डी. तैयार की जा रही हैं, जो भक्तों को शीघ्र ही उपलब्ध हो सकेंगी। प्रभु जी कहते हैं कि 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' के पहले चार भाग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करेंगे और पाँचवां भाग (अंतिम भाग) पंचम-पुरुषार्थ (श्रीकृष्ण-प्रेम) प्रदान करेगा। इन सभी भागों में उन्होंने अपने श्रील गुरुदेव द्वारा लिखवाए गये प्रवचनों को लिख दिया है जिन्हें पढ़कर सभी भक्तजन अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं और इन पुस्तकों में लिखी बातों पर अमल करके 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' कर सकते हैं।

श्रीअनिरुद्ध प्रभु जी, जब हरिनाम संकीर्तन प्रारंभ करते हैं तो सबसे पहले नित्यवंदना करते हैं। फिर मंगलाचरण करते हैं। मंगलाचरण करते-करते ही उनकी दशा दिव्य हो जाती है और वे भावराज्य में प्रवेश करते हैं। उनका विरह-संवाद, उनकी प्रार्थना, उनकी दीनता, उनकी खिन्नता, उनका रोना, मचलना, शिकायत करना, उनकी लगन, उनकी भगवद्-दर्शन की लालसा और मानव जीवन की नश्वरता को लेकर चेतावनी, भगवान् श्रीनृसिंहदेव से रक्षा के लिये विनती – इन सब भावों का दर्शन हम उनके द्वारा गाये जाने वाले भजनों व पद्यों में करते हैं। व्याकरण या विद्वानों की दृष्टि से भले ही इन भजनों या विरह के पदों में कोई तालमेल नहीं बैठता हो पर उनके हृदय के उद्गार व मन के भावों को तो कोई भाग्यवान विरला ही समझ सकेगा। हाँ, हमारे ठाकुर जी अपने नन्हें शिशु की तोतली भाषा को बखूबी समझते हैं और उनसे बातें भी करते हैं।

अपनी साधना के शुरु के वर्षों में जब 'कृष्ण-मंत्र' का पुरश्चरण करने के बाद, उन्हें रासलीला के दर्शन हुये, भगवान् ने उन्हें रबड़ी खिलाई, भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं उन्हें हरे रंग की साड़ी पहनाई और 'ॐ अलि' का नाम दिया तो उन लीलाओं के दर्शन कर उन्होंने 'ॐ अलि' के नाम से सैंकड़ों पद लिखे। बाद में श्रील गुरुदेव ने उन्हें शिशुभाव प्रदान कर, सैंकड़ों पत्र लिखवाये और सबको श्रीहरिनाम में लगाने का आदेश किया।

श्रीअनिरुद्ध प्रभुजी गत सात-आठ वर्षों से सभी को श्रीहरिनाम करने की शिक्षा देकर अपने श्रील गुरुदेव की आज्ञा का पालन कर रहे हैं और हम जैसे पामर-पतितजनों का उद्धार कर रहे हैं। उनके इस महान् कार्य के लिये हम उनके सदैव ऋणी रहेंगे।

आइये हम एक परमवैष्णव, परमभागवत, श्रीहरिनामनिष्ठ के पादपद्मों में अनंतकोटि बार दण्डवत् प्रणाम करते हुये, उनसे कृपा प्रार्थना करें ताकि हम सब के हृदयों में भक्तिरस की धारा बह निकले।

– वैष्णव चरणरज पिपासु
हरिपददास

आभार

इस प्रस्तुति में श्रीपाद चैतन्यचरण जी ने पूरा सहयोग दिया; उनका बहुत-बहुत आभार। डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया ने पूरे सौंदर्य बोध के साथ मुखपृष्ठ तथा पुस्तक का मुद्रण-संयोजन किया है, उन्हें साधुवाद।

– सम्पादक

श्री श्रीगुरु गौरांगौ जयतः

नित्य-वंदना

हे मेरे प्राणनाथ मेरे दीक्षा गुरुदेव! मेरे प्रेमास्पद शिक्षा गुरुदेव, श्री श्रीमद् भक्तिसर्वस्व निश्किंचन महाराज जी! संन्यासीवर्ग तथा सभी गृहस्थ-भक्तों के चरणकमलों में नराधम, अधमाधम, दासानुदास, अनिरुद्धदास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम एवं नतमस्तक होकर प्रार्थना है कि आप सबने हरिनाम-कीर्तन सुनाने की जो सेवा मुझे प्रदान की है, यह मेरे भजन-उन्नत होने का तथा श्रील गुरुदेव तथा ठाकुर जी द्वारा मेरे उद्धार होने का शुभ अवसर मुझे प्रदान किया है। इस सेवा से, आप सब प्रेमास्पद भक्तों की करुणा से भरी नज़र मुझ पर पड़ेगी और मेरा उद्धार होने में कोई कसर नहीं रहेगी।

मैं सभी श्रवणकारियों का सदा ही आभारी तथा ऋणी रहूँगा। मैं अल्पबुद्धि हूँ। आप सब मुझे शक्ति प्रदान करें ताकि मैं बिना किसी बाधा के रससहित आपके चरणों की सेवा कर सकूँ।

मेरे श्री श्रीराधामाधव जी के मंदिर में, श्रील गुरुदेव के आदेश से, हरिनाम कीर्तन का आयोजन, जो हर इतवार (रविवार) को सम्पन्न होता है, वह इसी प्रकार प्रेमपूर्वक एवं सफलतापूर्वक चलता रहे, ऐसी कृपा का भिक्षुक हूँ। हे मेरे श्री श्रीराधामाधव जी! हे मेरे बाप*! मुझ पर कृपा बनाये रखना।

---

* श्री अनिरुद्धदास प्रभु जी का ठाकुर जी से शिशु का संबंध है। अतः वह एक शिशु के रूप में उन्हें 'हे मेरे बाप!' कहकर संबोधन करते हैं।

मंगलाचरण

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्री गुरून् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण-रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं,
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगण-ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च।।

-2-

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

-3-

नमः ॐ विष्णुपादाय रूपानुग प्रियाय च।
श्रीमते भक्तिदयितमाधव स्वामी-नामिने।।
कृष्णाभिन्न-प्रकाश-श्रीमूर्तये दीनतारिणे।
क्षमागुणावताराय गुरवे प्रभवे नमः।।
सतीर्थप्रीति सद्धर्म-गुरुप्रीति-प्रदर्शिने।
ईशोद्यान-प्रभावस्य प्रकाशकाय ते नमः।।
श्रीक्षेत्रे प्रभुपादस्य स्थानोद्धार सुकीर्तये
सारस्वत गणानन्द सम्वर्धनाय ते नमः।।

-4-

ध्यानमूलं गुरुमूर्ति पूजामूलं गुरुर्पदम्,
मंत्रमूलं गुरुर्वाक्य, मोक्षमूलं गुरुर्कृपा।
गुरुकृपा ही केवलम्। गुरुकृपा ही केवलम्।।
गुरुकृपा ही केवलम्। गुरुकृपा ही केवलम्।।

-5-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

-6-

अखिल मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तद् पद्म दर्शितम् येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

-7-

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्य प्रिय एव तस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविंदम्।।

-8-

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो-ब्राह्मण हिताय च।
जगद्-हिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः।।

-9-

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च।
विष्णुभक्तिप्रदे देवि! सत्यवत्यै नमो नमः।।

-10-

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिधुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

-11-

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य नाम्ने गौरत्विषे नमः।।

-12-

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द।।

-13-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

विरह-वेदना

-1-

हे मेरे प्राणनाथ! कहाँ जाऊँ? कहाँ पाऊँ? आपके चरणारविंद।
हे मुरलीवदन! हे यशोदानंदन! हे कंसनिकंदन!
कोई ठिकाना है नहीं! हे मेरे जीवनधन!
सब कुछ किया चरणन् अर्पण। हे मेरे प्राण जीवन!

-2-

कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहिमाम्।
राम राघव राम राघव राम राघव रक्षमाम्।
राम राघव राम राघव राम राघव त्राहिमाम्।।

-3-

हे जगन्नाथ स्वामी! नयन पथगामी!
कृपा करो। हे अन्तर्यामी!
चरणों में राखो, हे प्राणनाथ!
डूबा जा रहा हूँ, अब पकड़ो हाथ।
गोते खा रहा हूँ, साँसों की बन रही है,
मौत की ठन रही है। बेगि संभालो, अब तो प्राणनाथ!

-4-

हे मेरे प्राणनाथ! आप कहाँ हो?
कहाँ जाऊँ? कहाँ पाऊँ? आपकी गोद।
रो रोकर भई आँखें लाल।
मन बड़ा हुआ बेहाल।
आपके बिना सूना बन गया ये त्रिभुवन।
अब रहेगा नहीं यह मेरा जीवन।

-5-

विरह की ज्वाला भभक रही है अन्तःकरण में,
किसे सुनाऊँ मैं? मेरे दुःख की गाथा,
कोई सुनने वाला नहीं।
इस चिन्ता से हुआ मन बेहाल,
यह हंसा मेरा उड़ने वाला, कौन समझे मेरा हाल?

-6-

क्षण क्षण मुझको युग सम लागे।
नाम उच्चारण से कुछ शान्ति आवे।
दिन बीते न रात, समय दुश्मन बन गया।
अनमना हो बैठ गया। यह समय मुझको खा गया।
कोई तो मिला दे बाप! याद में चढ़ गया ताप!
जिया घबरावे। रोने न पावे। गुमसुम ही रह जावे।

-7-

हे भक्तवत्सल! हे भक्तों के जीवन!
हम हैं तुम्हारे! हम हैं तुम्हारे!
माया ने मारा। जग ने ठुकराया।
आप ही हमारे। आप ही हमारे।
चरणों में राखो, हे दया के सागर।
बेगि संभालो, अब तो आकर।
भूल गये हम मार्ग तुम्हारा।
अब तो आकर दे दो हमें सहारा।

-8-

कहाँ जायें हम? किसको सुनावें? ये दुःख की गाथा!
कोई नहीं है सुनने वाला, तेरे बिना हे जीवनदाता!
हे गोपीनाथ! हे मदनमोहन! हे प्राणनाथ! हे जीवनधन!

हे गिरिधर! हे दामोदर! हम सब पड़े हैं चरणों पर।
तुम दयानिधि, हम दीनजन। दीनों के तुम हो प्राणधन।

-9-

जायें कहाँ? पायें कहाँ? यह जल रहा सारा जहाँ,
त्रितापों की आग में।
तुमको पुकार थके हैं, हे प्राण प्यारे!
कब मिलोगे हे नाथ हमारे?
तुम हो हमारे जन्म जन्म के,
हम हैं तुम्हारे जन्म जन्म के।
नाता आपका टूट गया है,
रो रहे हैं बिलख-बिलख कर।
अशरण-शरण, शरणागत-वत्सल गोविंद।
कष्ट पा रहे क्षण-क्षण मोहन!

-10-

हे मदनमोहन! हे गोपीनाथ!
हे राधामाधव! हे करुणासागर!
अब तो ले लो शरण में, हे दीनबंधो!
हे हृदयेश्वर! हे प्राणेश्वर!
माया से छुड़ा लो, हे भक्तवत्सल!
हे गिरिधर! हे श्यामसुंदर!
जन्म जन्म का मैं हूँ तुम्हारा।
जन्म जन्म से, मैं तो हारा।
बुढ़ापे ने आ घेरा, तन में किया बसेरा,
बल का किया नशेरा।

-11-

गौरहरि! हे नित्यानंद! करो हिये नाम का आनंद।
अर्थ न चाहूँ, काम न चाहूँ। न चाहूँ मैं धर्म और मोक्ष।
विरह अग्नि जला दो हिये में, प्रेम का प्याला पिला दो मन को,
अलमस्ती में रिझा लूँ तुमको।

-12-

विरह की अग्नि जब ये जलेगी,
कैसे डटोगे मेरे भगवन्?
चित्त से बाहर आना पड़ेगा।
अपना दर्श दिखाना पड़ेगा।
आँखों से धारा जब ये बहेगी
तो धारा में साँवल बहना पड़ेगा।
क्यों दुःखी को, दुःखी करो।
अपने दिल को अब रोना पड़ेगा।

-13-

चाँद की चाँदनी जला रही है।
साँवल हमको सता रही है।
तन मन सब जर-जर कर दिया।
तेरी याद में दुःख भर दिया।
दयानिधि! हम दया के भूखे।
कर दो शाम, जगत् से रूखे।

-14-

जन्म जन्म के हम सब तेरे।
फंस गये क्यों माया के घेरे?
तेरी माया कान्हा, भुला दिया है।
भवसागर में प्यारे डुबा दिया है।

मायाबंधन हटा दो साँवल।
तन मन से हम सब हो गये घायल।

-15-

कहाँ गोपीनाथ? कहाँ जगन्नाथ? कहाँ मेरे प्राणनाथ?
कहाँ नित्यानंद? कहाँ गौरहरि? कहाँ अद्वैत? कहाँ गदाधर?
कहाँ हरिदास? कहाँ गुरुदेव?
कहाँ पाऊँ? कहाँ जाऊँ?
आपके चरणारविंद, हे हृदयानंद।

-16-

तेरी गोद से बिछुड़े जब से,
माया ने जकड़ा है तब से,
तेरी कृपा के बिना न छूटे,
दयानिधि! हम सब दया के भूखे।
बेगि करो, हे दया के सागर!
गोद में ले लो, अब बेगि आकर।

-17-

हे हरिदास!
नाम की भूख जगा दो मन को,
नामामृत पिला दो हम को।
तुम सा कोई नामनिष्ठ नहीं है,
नाम रस पिला दो हम को।
अलमस्त रहें हम, नाम के बल पर,
ऐसी कृपा करो, न टालो कल पर।

-18-

विरह की ज्वाला जब ये जलेगी,
तो चित्त से श्याम बाहर आना होगा।
नैनों के अंदर जब श्याम बसोगे,
तो आँसुओं की धारा में बहना होगा।
कब तक श्याम यूँही छुपके रहोगे?
अंत में पर्दा उठाना ही होगा।
सामने श्याम आना ही होगा।

-19-

जिस्म के अंदर गोविंद क्यों छुपे हो?
बाहर गोविंद तुमको आना पड़ेगा।
विरह की ज्वाला जब दिल में जलेगी
तपत से गोविंद घबराना पड़ेगा।
आँसुओं की बाढ़, जब नयनन चढ़ेगी
तो अपने बल से गोविंद, रुक न सकोगे।
भक्तवत्सलता-सिंधु में जब दिल डूबेगा,
तो विरही को दर्श अपना दिखाना पड़ेगा।

-20-

कहाँ प्रभुपाद? कहाँ गौरकिशोर? कहाँ जगन्नाथ बाबा?
मैं तुम्हारा जन हूँ, संभालो मुझको दादा।
कहाँ जाऊँ? कहाँ पाऊँ? कोई ठिकाना नहीं।
भूल गया मैं रास्ता, बता दो मुझको सही-सही।

-21-

कृष्ण हे! कृष्ण हे! राम हे! राम हे!
हे प्राणों के ग्राहक! हे अन्तर्यामी!
मेरी भी सुनो। मेरी भी सुनो।
भटक रहा हूँ राहों पर। तेरी दया की चाहों पर।

-22-

कहाँ कृष्ण? कहाँ राम?
तुम बिन मुझको कहाँ विश्राम?
तुम्हारे स्मरण बिन जीवन हराम।
हे राधारमण! हे श्रीराम!
तुम बिन ज़िंदगी वीरान।
कहाँ जाऊँ? कहाँ पाऊँ? आपके चरणारविंद।
हे राधारमण! हे मुरलीवदन!
हे मदनमोहन! हे यशोदानंदन!

-23-

हे मदनमोहन! हे श्यामसुंदर!
तुम कहाँ और मैं कहाँ !
यह जल रहा सारा जहाँ, त्रितापों की आग में।
मैं भी जल रहा हूँ। तुमको पुकार रहा हूँ।
सुनो! सुनो! अब मेरी। मैं तो शरण हूँ तेरी।
तुम हो दया के सागर। मुझको संभालो आकर।
देरी न करो हे, शरणागतवत्सल!
मैं तुम्हारा जन, चरणों की धूल हूँ।
हे प्राणों के ग्राहक! किसकी शरण में जाऊँ?
चरणों में हा-हा खाऊँ।
हे दीनबन्धो! हे करुणासिन्धो!
करुणा करो अब मुझ पर।
मेरा जीवन है सब तुझ पर।

-24-

कोई नहीं तुम्हारे बिना,
यह संसार है मेरा सूना-सूना,
अकेला पड़ा हूँ मैं, मेरे बाप!
अब तो उतारो ये माया-ताप।
तड़प रहा हूँ क्षण-क्षण पल-पल,
दया न आई, हे मेरे तात!

-25-

संसार मेरा सूना-सूना,
दुःख से भरा है ये कूना-कूना,
दया न आई, हे निर्मोही!
तुमको कहे न, दयानिधि कोई।

-26-

अब तो साँस घुट रहा है।
इस वृक्ष से हंसा उड़ रहा है।
बेगि आ संभालो मुझको।
जिंदगी की शर्म है, अब तो तुझको।
अपना नाम स्मरण करा देना।
अन्त को निभा देना।
मानुष जन्म सफल बना देना।

-27-

सूना-सूना है संसार।
जीवन मुझको बन गया भार।
क्षण-क्षण मुझको लागत युग सम,
दिल में भर गया गहरा यह गम।

-28-

उड़ रहे प्राण-पखेरु, अब तेरी तलाश में।
कण कण में तू कहाँ छुपा है?
दिल में या आस-पास में।
विरह की ज्वाला जब जलेगी,
रह न सकोगे इस हरास में।

-29-

हा नृसिंह! जय नृसिंह। जय जय नृसिंह।
संकट हरण। अशरण-शरण। अभयकरण।
भक्तों के प्राणनाथ! हे भक्तों के रक्षक।
अशरण-शरण। शरणागतवत्सल।
दया करो, हे प्रहलाद् के प्राणनाथ।
माया का बँधन छुड़ा दो भगवन्।
मैं आपका जन्म-जन्म हूँ प्रणतजन।

-30-

संसार स्वार्थी है कोई नहीं अपना।
तू ही मेरा अपना, यह जग है सारा सपना।
अब तो बेगि अपनाओ। मुझको न तरसाओ।
जन्म जन्म का तेरा! अब तो हटा दो फेरा।
चरणों का मैं हूँ तेरा। माया ने मुझको घेरा।
हे गोपीनाथ! हे जगन्नाथ! हे मदनमोहन! हे प्राणनाथ!
अनसुनी न करो। करो नहीं अब देरी।

-31-

मेरी जान जा रही है, मेरे प्राण जा रहे हैं,
कब आओगे मेरे तात? कब आओगे मेरे बाप?
रात की निंदिया गई, दिन की गई भूख।

हृदय में व्याकुलता भई, अब प्राण जायेंगे छूट।
हे प्राणवल्लभ! हे मेरे दिल के ग्राहक!
कब तक मैं व्याकुल रहूँ?
आप बिन क्षण भी चैन नहीं,
रो-रो नैन गमाई।

-32-

मुझको छोड़ चले कहाँ तात?
क्षण भी मुझको चैन नहीं।
न दिन जावे न रात,
रो-रो नैन भये सब लाल,
दिल भया क्षण-क्षण बेहाल।
हे नित्यानंद! हे गौरहरि!

-33-

आँसुओं की बाढ़ जब चढ़ेगी,
तो बाप! अपने बल से रुक न सकोगे।
भक्तवत्सलता सिंधु में जब दिल डूबेगा,
विरही को अपना दर्श दिखाना पड़ेगा।

-34-

हा राधानाथ! हा प्राणवल्लभ! हा प्राणनाथ!
हा जगन्नाथ! हा गोपीनाथ! मेरे प्राणों के ग्राहक, श्यामसुंदर।
हे मेरे जीवनधन! कहाँ जाऊँ? कहाँ पाऊँ? आपके चरण।
हे मुरलीवदन! हे यशोदानंदन! हे असुरनिकंदन!

-35-

रो-रोकर नैन भये अंधे।
तुम दयानिधि कहलाते। ये नैना दर्शन के प्यासे।
फिर भी दया नहीं लाते, फिर क्यों मुझे तड़पाते?

रात दिन तड़पाते क्यों, मुझको रुलाते क्यों?
हृदय से कठोर बन जाते।
क्या वो दया अब नहीं है जो पहले थी भगवन्!
कलि के भक्तों की शक्ति घट रही पल-छिन।
दीन-हीन, मन के मलीन, अब तो गौर करो गोविंद।
हे मेरे प्राणों के ग्राहक! क्यों मुझे सताते हो?

-36-

सुन लो श्याम दु:खियों की गाथा, सुनने वाला कोई नहीं।
माया का पिंजरा दु:खी किया है, छुड़ाने वाला कोई नहीं।
आपके नाम की शरण ली है, हरिनाम से बड़ा कोई नहीं।
कलि ने हमें रौंद दिया है, बचाने वाला कोई नहीं।
कहाँ जावें? कहीं ठौर नहीं। तुम सा हमारा कोई और नहीं।
रो-रो नैन गमाई हमने, आँसू पोंछने वाला कोई नहीं।
सब स्वार्थ के झूठे-झगड़े, निबटाने वाला कोई नहीं।
सुनो-सुनो हे सुख के सागर, अपनाने वाला कोई नहीं।
किसे सुनावें दु:ख की गाथा, तुमसा हमारा कोई नहीं।

-37-

हा नृसिंह! हा नृसिंह! कहाँ जाऊँ छोड़ के चरण?
अभयकरण! अशरण शरण! संकट हरण!
हा नृसिंह! हा नृसिंह! प्रहलाद के संकट हरण।
प्रहलाद् के कारण, नृसिंह रूप धारण।
हा भक्तवत्सल! करुणानिधि मायाहरण!

-38-

हरिनाम भक्ति से ऊँची कोई भक्ति नहीं।
हरिनाम स्मरण से ऊँची कोई शक्ति नहीं।
मानव जन्म सा ऊँचा कोई जन्म नहीं।

आत्मज्ञान सा ऊँचा कोई ज्ञान नहीं।
भगवत् भूल सी ऊँची, कोई भूल नहीं।
क्रोध सा ऊँचा कोई शूल नहीं।
गुरुभक्त चरणरज सी कोई धूल नहीं।
माया-जादू से ऊँचा कोई जादू नहीं।
इसको समझने से ऊपर कोई ज्ञान नहीं।
न समझने के ऊपर कोई अज्ञान नहीं।

-39-

हे करुणानिधि निताई गौर! जो नवद्वीप में तुम्हारे आवे।
तो अपराधी-पापियों का उद्धार हो जावे।
हम अपराधियों को हृदय से लगा लो अपने हाथों से,
तो इसमें शक नहीं कि हम सबका जीर्णोद्धार हो जाये।
बेहोशी में बैठे हैं, रो-रोकर यह कहते हैं,
किसी भी सूरत से गौर-निताई का दीदार हो जाये।
मृदंग-झांझ की रसमयी ध्वनि गुंजा दो गौरहरि आकर,
कि जिसकी तान की हर तन में झँकार हो जावे।
पड़ी भवसिन्धु में पापियों की डूबत है नैया,
निताई तुम सहारा दो ताकि बेड़ा पार हो जावे।

-40-

राधे-राधे-राधे, बरसाने वाली राधे।
वृषभानुलली श्रीराधे, कीर्ति दुलारी राधे।
कृष्णप्यारी राधे, गोपीजन प्रिय श्रीराधे।
प्रेमभक्ति प्रदायनी - श्रीराधे।
वृन्दावन विलासिनी- श्रीराधे।
राधे-राधे-राधे, बरसाने वाली राधे।

-चौपाईयाँ-

हमारे प्रभु श्री अनिरुद्धदास जी अपने पत्रों में व हरिनाम-संकीर्तन में गोस्वामी श्री तुलसीदासकृत रामचरितमानस के जिन दोहों व चौपाईयों को बार-बार दोहराते हैं, उनको यहां दिया जा रहा है।

जो सभीत आया शरणाई। ताको राखूँ प्राण की नाईं।।
जाको नाम लेत जगमाहिं। सकल अमंगल मूल नसाहिं।।
जाना चहिए गूढ़ गति जेऊ। जीह नाम जप जानेऊ तेऊ।।
राम नाम का अमित प्रभावा। सन्त-पुराण उपनिषद गावा।।
बिबसहु जाको नाम नर कहहीं। जन्म अनेक रचित अघ दहहीं।।
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गद्‌गद् गिरा नयन बहे नीरा।।
ताकी करूँ सदा रखवारी। जिमि बालक राखहिं महतारी।।
पुलक गात हिय सिय रघुबीरू। जीह नाम जप लोचन नीरू।।
सादर सुमिरन जो नर करहीं। भव वारिधि गोपद इव तरहिं।।
जो साधु-संग द्रोह करहीं। राम रोष पावक सो जरहीं।।
इन्द्र कुलिष मम शूल विशाला। कालदण्ड हरि चक्र कराला।।
इनसे जो मारा नहिं मरहिं। साधु-द्रोह पावक सो जरहिं।।
पुण्य एक जग में नहीं दूजा। मन-क्रम-बचन साधु-पद-पूजा।।
सानुकूल तिन पर मुनि देवा। जो तजि कपट करे साधु-सेवा।।
सुन सुरेस उपदेश हमारा। रामहि सेवक परम पियारा।।
मानत सुख सेवक सेवकाई। सेवक बैर, बैर अधिकाई।।

-दोहा-

मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर संतन सेव।
मो समेत विरंचि शिव, वश ताके सब देव।।
जेहि विधि कपट कुरंग संग, धाय चले श्रीराम।
सो छवि सीता राख उर, रटत रहति हरिनाम।।
कथा कीर्तन करने की, जाकी निसिदिन रीत।
कह कबीर ता दास सों, निश्चय कीजै प्रीत।।

शिशु का रूठना–मचलना

मेरे शिक्षागुरु, श्रीअनिरुद्धदास जी, भगवान् श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की तरह उनसे चिपके रहते हैं। कभी रोने लगते हैं, कभी हँसते हैं, कभी गोद में चढ़ने की ज़िद करते हैं और एक बार गोद में चढ़ गये तो उतरना ही नहीं चाहते। श्रीधाम द्वारका की लीला में दादा भगवान् श्रीकृष्ण जब सुधर्मा सभा में जाने लगते हैं तो दादी रुक्मिणी की गोद में बैठा यह छोटा सा शिशु – अनिरुद्ध, दादा भगवान् श्रीकृष्ण की गोद में चढ़ने की ज़िद करता है। भगवान श्रीकृष्ण उसे गोद में उठाते हैं, दुलारते हैं, पुचकारते हैं और थोड़ी देर बाद उसे प्यार करके, दादी रुक्मिणी जी की गोद में देकर सुधर्मा सभा में जाना चाहते हैं पर शिशु अनिरुद्ध ऐसी ज़िद पकड़ लेता है कि गोद से उतरना ही नहीं चाहता। दादा श्रीकृष्ण थोड़ी देर के लिए रुक जाते हैं और उसे बातों में लगाकर, दुलारकर, पुचकार कर, फिर गोद से उतारने का प्रयास करते हैं। पर शिशु अनिरुद्ध की ज़िद के आगे बार–बार प्रयास करने पर, उन्हें सुधर्मा सभा में जाने का अपना विचार छोड़ना पड़ता है और वे अपने पौत्र अनिरुद्ध के प्रेम के वशीभूत होकर सब कुछ भुलाकर, उसे गोद में बिठाकर खिलाने लगते हैं।

प्रभु प्रेमी भक्तो! यह भावराज्य की अनुभूति है। हमारे अनिरुद्ध प्रभु जी ने यह बात मुझे कई बार बताई है। जैसे एक छोटा सा बच्चा स्तनपान करता है, माँ की गोद में जाकर चुप हो जाता है और गोद में न मिलने पर ज़ोर–ज़ोर से रोने लगता है। ठीक वही भाव यहाँ व्यक्त किए गए हैं। आईये! भावराज्य की एक झलक हम भी तो देखें।

न यूँ मैं दुःख में घबरा के छोड़ूँगा,
जो छोड़ूंगा तो कुछ भी तमाशा करके छोड़ूँगा।।
अगर था छोड़ना मुझे, क्यों गोद में उठाया था?
अब उतारो, तो मैं जाने क्या–क्या करके छोड़ूँगा।।
मेरी रुसवाईयां देखो, मज़े से, शौक से देखो,
तुम्हें भी मैं सरे–बाज़ार, रुसवा करके छोड़ूँगा।।
मैं उस बेदर्द दिल में, दर्द पैदा करके छोड़ूँगा,
उतारा गोद से तुमने जो, तुम्हारा दिल दहला दूँगा।।
यदि अश्रु नैनों में है मेरे, तो गोद का कब्जा करके छोड़ूँगा।।

–भजन–

श्रील अनिरुद्ध प्रभुजी द्वारा रचित तथा कुछ अन्य भजन जो वे गाया करते हैं, यहाँ दिये जा रहे हैं। प्रभु–प्रेमी–भक्तवृन्द! इन भजनों को गाकर व उनका भाव समझकर, जन्म सफल कर लेवें – ऐसी प्रार्थना है।

– भजन –

–1–

भक्त कहते हैं हरिनाम में मन लगता नहीं।
लगता है पर 'अहम' शत्रु को कोई तजता नहीं।
महत्व हरिनाम का कोई समझता नहीं।
श्रवण करे हरिनाम तो निश्चय ही हिय अकुलावे।
विरह–ज्वाला जलाकर दर्शन प्रभु का पावे।
क्यों नाम अपराध कर जीवन अमूल्य गंवावे।
मौत सामने खड़ी है फिर भी चेत न आवे।
सचेत किया बार–बार फिर भी सोता ही रह जावे।
दास अनिरुद्ध, गुरुदेव वचन पर जीवन अपना बितावे।।

-2-

कौन कहता है घनश्याम आते नहीं
आते हैं लेकिन उनको दिल से कोई बुलाते नहीं।
दिल से बुलाते तो घनश्याम कहीं जाते नहीं।
रोना ही घनश्याम को खींच लाता है।
श्रद्धा की बगिया में घनश्याम मुरली बजाता है।
कपट का हृदय घनश्याम को भाता नहीं।
स्वच्छ हृदय में उनको कोई बिठाता नहीं।
हरिनाम की मीठी लोरी उन्हें कोई सुनावे।
तो घनश्याम इक क्षण में दौड़ कर आवे।
दास अनिरुद्ध का घनश्याम को रोना भावे।

-3-

यदि गौरहरि हमसे रूठ जायेंगे,
तो बताओ हम चरण छोड़ कहां जायेंगे।
अपना खास घर छोड़ कर हम भटक गए,
न जाने कितने घर बना-बना हम आ गए।
अब थक गए और कब दृष्टि डालोगे?
दुःख सागर में डूबे, नाथ कब संभालोगे?
जग में कोई नहिं अपना सब बेगाने हैं,
जग तो एक सपना है, सभी मर जाने हैं।
आप ही हमारे जन्म-जन्म के माता पिता,
भूल गए रास्ता, आप हीं से सच्चा रिश्ता।
अनिरुद्ध को क्या देख लोगे, इस माया की चक्की में पिसता?

-4-

शिशु हूँ गौरहरि, मैं आदि जन्म का तुम्हारा,
सुना है, दया का, तू है भण्डारा।
जो निज कर्म से होता तरने का सहारा,
तो फिर ढूंढता क्यों सहारा तुम्हारा?
इस पामर की नजरों में जब तुम आए,
उसी क्षण में तरने का हो गया सहारा।
इस दुःखिया की बिनती सुनो मेरे बाप!
अनिरुद्ध दास शिशु है प्यारा तुम्हारा।

-5-

कलिकाल में जो तेरा न हरिनाम से प्यार होगा,
तो बता दे किस तरह तेरा अपार भवसागर से पार होगा।
विषयों में रमना, खाना और सोना, सुख में हंसना, दुःख में रोना,
तू ही बता दे पशुओं में व तुझमें कितना अलगाव होगा।
अभी तो अलमस्त होकर जी रहा है, मौत पर पछताना होगा।
मानुष जन्म पाकर, अज्ञान में जाकर, चौरासी घुमाव होगा।
अब भी समझ, भगवान से प्रीतकर, भक्तों में तेरा शुमार होगा।
अनिरुद्ध दास की बिनती सुन, तेरा भविष्य में उद्धार होगा।

-6-

यह सच है यदि गौरहरि अवतार न होता,
तो कौन अधमों को आकर बचाता।
अगर न होते अधम ही जग में,
तो अधम उद्धारण क्यों जग में आता।
अनेक अपराध जीवों के,
क्षमा वो करते हैं।

परन्तु अपराधी ही न होते,
तो कौन उनसे क्षमा कराता ?
पलट वो सकते हैं भाग्य जनों के,
तभी तो निमाई दयालु कहाते हैं।
तो क्या गरज थी किसी को,
जो उनके,लिए अश्रु बहाता ?
क्योंकि वे सबके जन्म-मरण हटाते हैं,
अनिरुद्ध दास को तो वे गोदी चढ़ा प्यार करते हैं।

-7-

सुना है निताई के समान कोई दयालु नहीं,
उनकी बैठे हैं बाट में, कब हम पर दया होगी ?
ज़िन्दगी सारी चली गई, अब तो पड़ गएं खाट में,
बुढ़ापा ने आ दबोचा, तन में बल नहीं रहा।
कैसे जावें सत्संग में, असमर्थता का राज है,
चिंतन का सहारा ले, छोड़े सब काज हैं।
हर जगह मौजूद हैं, प्रार्थना सुनते ही होंगे,
हम दीनों पर दया, हरदम करते ही होंगे।
अनिरुद्ध दास कह रहा है सुन लो मेरी बात निताई,
न जाने कब मौत आ जावे, अब तो करो न ढिठाई।

-8-

बहुत दिनों से सुनकर प्रशंसा तुम्हारी,
शरण आ गया गौर-निताई तुम्हारी।
जो अब टाल दोगे मुझे अपने दर से,
तो होगी हँसी, बाप दर-दर तुम्हारी।

सुना है घर-घर जाकर अपनाया सबको,
यही प्रार्थना है, यही साधना है,
जो कुछ है, सब कुछ ही तुम्हारी।
मुझे अपनाओ मेरी ज़िम्मी तुम्हारी।
ये अश्रु तुमको खबर दे रहे हैं,
कि है याद दिल में बराबर तुम्हारी।
अनिरुद्ध दास पुत्र जो है तुम्हारा,
अपनापन निभा लो, कर दो दया री।

-9-

प्रेम की डोर से भगवान् खिंचे चले आते हैं,
जो अपनापन चरणों में देकर बुलाते हैं।
वे रह नहीं सकते, धाम को छोड़ भगे आते हैं,
अपना बल छोड़ा, तब गज, द्रौपदी की लाज बचाते हैं।
अरे कोई पुकार कर देखे तो सही, हरि आते हैं कि नहीं,
अपना दिल खोलकर पुकारो, एक क्षण लगाते नहीं।
पूर्ण शरणागति जब दिल में आती है,
तो असली बाप को तुरंत दया आ जाती है।
अपनी गोद में चढ़ा प्यार भरा वे चुम्बन करते हैं,
भूल गये असली बाप को, इसलिए दुःख भोगा करते हैं।

-10-

श्रीचैतन्य जिनका नाम है, नदिया जिनका गाँव है।
ऐसे त्रिलोकीनाथ को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
शची जिनकी मैया हैं, जगन्नाथ बपैया हैं।
ऐसे श्रीनिमाई को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।

ईश्वरपुरी को गुरु बनाया, ब्रह्मांडों को जिसने रचाया।
ऐसे मर्यादाशील को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
जा-जाकर जीवों को अपनाया, जन्म-मरण से उन्हें छुड़ाया।
ऐसे करुणासिंधु को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
कलियुग में अवतार लियो, हरिनाम प्रचार कियो।
ऐसे कीर्तनानंद को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
इस युग का धर्म सिखाया, नामामृत सबको पिलाया।
ऐसे विरहानन्द को, मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
पापी को जा-जा अपनाया, अपराधी को जा ठुकराया।
ऐसे दयालु नाथ को, मेरा बारम्बार प्रणाम है।।

-11-

जय नृसिंह जय नृसिंह जय जय नृसिंह,
संकट हरण, अशरण शरण, अभयकरण।
अपने भक्त प्रहलाद के लिए आपने अवतार लिया,
जब भक्त प्रहलाद पर संकट पर संकट ढहा दिया।
तो आपसे रहा न गया, जिया आपका अकुला गया,
तो झट खंभ फाड़ आ गया।
इतना ज़ोर हुंकार किया कि त्रिलोकी को कंपा दिया,
अवनी तक को हिला दिया प्रलय जैसा मचा दिया।
कोई ना आया पास में, लक्ष्मी तक को डरा दिया,
इतना ज़ोर का क्रोध किया, आंखों में अग्नि जला लिया।
जब निगाह गई प्रह्लाद पर तो न जाने क्रोध कहाँ गया!
वात्सल्य-रस-सिंधु में अपने को डुबा लिया।
जो वर मिला, ब्रह्मा से, उसको भी साध लिया,
देहली ऊपर बैठकर हिरण्यकश्यपु को जांघों पर लिटा लिया।

रक्त की बूंदों से अपने को सजा लिया,
झट उठा प्रह्लाद को अपनी गोद में बिठा लिया।
बार-बार चुम्बन किया अपनी छाती से लगा लिया,
प्रेम अश्रु डाल-डाल प्रह्लाद को नहला दिया।
और कहा प्रह्लाद से, मुझको आने में देर भयी,
तुमने कष्ट सहे हैं अनेक, राखो प्यारे मेरी टेक।
हाथ जोड़ प्रह्लाद ने कहा, जो होना था, सो हो गया,
ऐसा न कहो मेरे प्रभु, अपने चरणों में स्थान दो।
नृसिंह ने कहा, प्रह्लाद मेरे से वर मांग लो,
यदि देना है तो मेरे प्रभु, ऐसा वर मुझे दीजिए,
मेरे मन में कामना न हो कोई ऐसा मन कीजिए।
केवल आपके चरणों में मेरा मन लगा दीजिए।
नृसिंह ने आँसु भर कहा, ऐसा ही होगा मेरे प्रह्लाद!
जावो सुख से राज करो, भजन में मेरे लगो।
मेरे भक्त का त्रिलोकी में कोई बाल बांका कर नहीं सकता,
प्रलय में भी मेरे भक्त का नाश होता नहीं।
हे करुणा सागर! भक्त वत्सल! मुझ पर भी कृपा करो।
जन्म-जन्म तुम्हारा हूँ, अपनी शरण में लीजिए,
अनिरुद्ध दास है आपका, अब तो अपना लीजिए।

-12-

अजी रोना जिसको आ गया,
वह निश्चय ही प्रेम पदार्थ पा गया।
रोने में जो मज़ा है, वह किसी में है नहीं,
रोकर कोई देखे कि क्या यह वाक है सही।

प्रभु रोने में खिंचे आते हैं,
आकर फिर दिल में बैठ जाते हैं।
गौर-निताई ने रोना सिखाया,
रोकर भक्तों के मन भाया।
कीर्तन का मज़ा जब ही है,
जब आंखों से नीर बही है।

–13–

गौरहरि को तूने नहीं जाना रे।
अदोषदर्शी को तूने ना पहचाना रे।
झूठ, कपट व्यवहार में बिताया आठों याम,
एक बार भी रोकर लिया न हरि का नाम,
अब अन्त में क्यों करे बहाना रे।
तू स्वयं को नहीं जाना रे।
सत्संग में बिताया जीवन, सत का चढ़ा ना रंग,
काला का काला रह गया, कपट का किया संग,
रहा सदा दिवाना रे।
अब भी समय है, प्रेम से ले-ले हरिनाम,
अंत काल सुधरेगा, जावेगा प्रभु के धाम।
पल पल में प्रलय हो रहा है,
फिर लगे हाथ पछताना रे।
मानुष जन्म न बारम्बारा,
प्रभु कृपा मिला इस बारा।
अमूल्य रतन धन खोना रे,
फिर अनंत समय में रोना रे,
अनिरुद्ध मन स्वयं को ना जाना रे।

–14–

ओ मेरे बाप! मुझे भूल न जाओ
शिशु हूँ आपका क्यों न गोद बिठाओ?
माया का तेरा बंधन, मुझसे खोला न जाय,
आपकी कृपा बिना, और न कोई उपाय।
जीवन घड़ियाँ बीत रहीं, मौत नीरे(निकट) आ रही,
यदि आप भी मुझे त्याग दोगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं?
कोई नहीं अपना, ये जग तो सारा सपना,
आप दयानिधि कहलाओ, मेरे सुधि न लाओ।
कैसे आऊँ पास में, मैं तो हूँ मजबूर।
हाय मेरे बाप! चरणों से हो गया दूर।
विषयों ने विष जो पिला दिया,
तन मन सब जर-जर कर दिया,
अनिरुद्ध शिशु को आके बेगि अपनावो।

–15–

हे गौर! दयावानों के सिरमौर बता दो!
छोड़ूं मैं भला आपको किस तौर बता दो?
हाँ, शर्त यह कर लो तो मैं हट जाऊँगा दर से,
अपना सा दयानिधि कोई और बता दो।
यदि चरणों में मैं आपके, गौर-निताई रह सकता नहीं,
तो दयानिधि कोई और ठौर बता दो।
यदि रोने पर भी आपका दिल पसीजता नहीं,
तो अनिरुद्ध शिशु को आपकी गोद के सिवा कुछ भी भाता नहीं।

-16-

उत्साह

कुछ स्वभाव अनोखा गौर का बताते हैं,
जो गौरहरि के भक्त कहाते हैं।
जब से प्रेम अंकुर, निकला गौर बाप का,
तो टूट गया नाता जगत, जग-ताप का।
हर बार, हर ठौर, जा यही पुकारा,
हरि बोल! हरि बोल, का लिया सहारा।
क्या खबर थी गौर प्रगटे नवद्वीप धाम में,
रह न सके, खिंच गए, दिल उस गांव में।
परवाह नहीं कि किस हालत में हैं हम,
चल दिए आंखें मींचकर, यही था दिल में गम।

-17-

उलाहना

तुमने गौर-गोविंद अधमों को तारा होगा।
तो कभी हमको भी तरने का इशारा होगा।
हम तो हैं प्रसिद्ध पापी, और तुम हो पतित पावन।
तुम न होगे तो भला किस विधि निस्तारा होगा।
नाम बदनाम हर दशा में तुम्हारा होगा,
अनिरुद्ध दास को तारा नहीं है तो कौन तुम्हारा होगा।

-18-

शरणागति

हे श्यामसुन्दर अब तो हम, हर क्षण तुम्हारे बन गए।
जब यह दिल दुनियाँ का था तो दुश्मन हज़ारों बन गए।
जब यह दिल तुमको दिया, हर दिल के प्यारे बन गए।
जोग जप-तप यज्ञ से, कोई बना-बिगड़ा करे,
हम तो हरिनाम-भागवत-गीता के सहारे बन गए।
गौर से देखेंगे तुमको तो आनन्द के फव्वारे बन गए।
विरह-सागर में डुबकी लगा, आँखों के तारे बन गए।
अनिरुद्ध दास आपका है, आप मेरे प्यारे बन गए।

-19-

उलाहना

हे गौर मुझे अपना लेना,
दीन दु:खी को शिशु बना लेना।
ठोकरें खाईं बहुत झूठे प्यार पर,
इसीलिए बाप! आया तेरे द्वार पर।
अब मुझे राखो न राखो, यह आपके हाथ है,
गर नहीं राखोगे तो बदनामी आपकी तात है।
अपने नाम की लाज बचा लेना,
मेरे गौर मुझे अपना लेना।
पापी, जगाई, मधाई को, अपनाया था आपने,
क्यों शरणी दी? फिर क्यों ठुकराया आपने?
अनिरुद्ध दास को अब क्यों मिलाया खाक में,
इस अधम को चरणों में जगह देना।

-20-

उलाहना

यदि मुझ जैसे पामर, अपनाए न जायेंगे।
तो आप गौरहरि, दयालु कहे न जायेंगे।
जो आ चुके हैं चरणों में तो ठुकराए न जायेंगे।
अब हम भी आपका दर छोड़कर कहीं न जायेंगे।
जगाई-माधाई के पाप, आपने स्वयं ले लिए,
तो मेरे पाप-अपराध, आपसे लिए न जायेंगे।
चुप भी रहूंगा यदि आप यह कह दें,
कि तुम जैसे अपराधी तारे न जायेंगे।
तो मैं भी कह देता हूँ आप संतोष न पायेंगे,
अनिरुद्ध दास के आँसू, आपका दिल खींच लायेंगे।

-21-

चेतावनी

मन अपना लो अन्तिम उपदेश,
यह देश छोड़ कर, जाना है अपने देश।
अब तक धोखे में रहा, सब कुछ खो दिया,
किन्तु अब सचेत हो, गौर-निताई चरणों में जावो।
रात दिन अष्ट. पहर हरिनाम गुण गावो।
गौर-निताई कृपा से कटते हैं दु:ख-क्लेश,
गौर करुणाकर माफ कर दें सब पाप-अपराध,
ऐसा दयालु अवतार न हुआ, कृपालु अगाध,
इन प्रभु की दया बिन, यह जिंदगी बेकार,
अनिरुद्ध कह रहा, मन समझ ये ही सार।

-22-

एक बिनती मेरी सुन लो हे श्यामसुन्दर।
कर दो नराधम की नैया पार मेरे गिरधर।
अच्छा हूँ या बुरा हूँ जैसा भी हूँ तुम्हारा।
जीवन का भार तुम पर सौंपा है, हे कन्हैया।
तुम हो पापियों का उद्धार करने वाले।
मैं तो सिरमौर पापी पुत्र हूं मेरी नैया के खवैया।
तुम करुणानिधि कहावो, अब नाम न लजावो।
अपने नाम की टेक राखो, भक्तों के रखैया।
रोकर मैं बोलता हूँ, हृदय के अंतर्यामी।
प्यार थोड़ा दे दो, हे प्यारे यशोदा मैया।

-23-

कीर्तन में जब तक तू मगन नहीं होगा।
तब तक छः दोष जाने का जतन नहीं होगा।
कलिकाल में अन्य साधन कुछ भी नहीं हैं।
न पाएगा प्रेमधन जब तक अश्रुपात नहीं होगा।
जप, पूजा, व्रत, नेम करले कितना ही तू।
सब व्यर्थ है, जब तक मस्ती से हरिनाम नहीं होगा।
अन्य साधन से क्या प्यास तेरी बुझेगी ?
चातक बन गौरहरि का, तो प्रेम से भजन होगा।
तू तौल कर जो देखे, नैनों का प्रेम मोती।
तो एक मोती का वज़न, सारे साधन का न होगा।
अनिरुद्ध तौलकर जो देखा, तो वज़न अश्रुपात का अधिक होगा।

-24-

मन का उद्‌गार

क्या उदारता का स्वभाव, गौर अब नहीं है ?
क्या अधमों से कोई दरकार, अब नहीं है ?
पाते थे जिन चरणों से हिम्मत, लाखों अपराधी,
क्या अपराधियों का कोई दरबार अब नहीं है ?
क्षमा का अवतार लेकर, आए इस जग में,
क्या वह करुणासिंधु का, स्वभाव अब नहीं है।
बैठा अनिरुद्ध ताक में, क्या दिल में क्षमा का भाव अब नहीं है ?

-25-

कैदखाना है दुनियाँ अजब जादू-टोने की।
जिससे कैदी जीव को नफरत नहीं होने की।
मोह के पिंजरे में खुश, जो है अज्ञान के,
उस अंधेरे में सारी ज़िंदगी खोने की।
कैदी ने पहनी पैरों में बेड़ियां,
फर्क इतना ही है कि एक लोहे की, एक सोने की।
काल वैरी ने कैसा दिया सख्त काम,
टोकरी कर्मों की सिर पर अष्टयाम ढ़ोने की।
अनिरुद्ध को फेंका, सन्तन से दूर,
बस यही बात पछताने की व रोने-धोने की।

-26-

दैन्य-युक्ति

भक्त बनता मगर, अधमों का सिरताज भी,
देखकर पाखंड मेरा, हंस पड़े गिरिराज भी।
कौन मुझसा कपटी होगा इस भरे संसार में,

सुनके मुझ कपटी की चर्चा, डर गए यमराज भी।
क्यों पापी कहे उनसे, कि तारो हमें श्रीचैतन्य जी ?
हो पतित पावन तो खुद रखोगे, अपनी लाज भी।
नैनों से सरिता बहा देंगे, हृदय उनका दहला देंगे,
अनिरुद्ध जो है पापी, अपना लो अब तो बाप जी।

-27-

अरे मनवा, ध्यान से सुन ले मेरी बात रे।
तेरी अनमोल सी ये काया क्षण-क्षण बीती जाय रे।
बाल-युवा-बुढ़ापा बीता अन्त समय मर जाय रे।
दो गज़ कफन का टुकड़ा, साथी तुझे औढ़ाय रे।
चार जने कंधे पर लेकर तुझे श्मशान पठाय रे।
लकड़ियों पर रख कर तन को, धक-धक आग जलाय रे।
छोड़ तुझे श्मशान में अकेला, मुट्ठी भर राख बन जाय रे।
अन्धकार में उड़ती फिरती, रास्तों में गिर जाय रे।
ठोकर खावे जन-जन की, अन्तकाल बिगड़ जाय रे।
परम पिता को भूल गया तू यही दशा बन जाय रे।
मानुष जन्म न बारम्बारा, अन्त समय पछताय रे।

-28-

शाम तू मुझको न भूल।

मैं अपराधी पामर पापी, मार्ग है प्रतिकूल।
अंधा होकर चलता हूँ अपनी रुचि अनुकूल।
आश्रयहीन कोई न मेरा, मैं चरणन की धूल।
धूल की लाज राखो मेरे गिरिधर, मैं राधा-चरनन का फूल।

रक्षा करे न चक्र सुदर्शन, न शिव का त्रिशूल,
रहे सदा फहराता सिर पर, तेरा पीताम्बर दुकूल।
ऐसी कृपा करो मेरे साँवल, क्षण-क्षण गढ़े विरह की शूल।
शाम तू मुझको न भूल।

–29–

आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।
मेरी रसना पर आओ प्रभु, मेरी जिह्वा पर आओ।।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।
1. रसना मेरी अति दुर्भागिनी, कटु वाचिनी और पापमयी।
अब-अवगुण बिसराओ इसके, आ जाओ प्रभु आ जाओ।।
2. कण्ठ मेरा अति कर्कष वाणी, नाम मधुरिमा नहीं जानी।
अपनी मधुरता आप बिखेरो, नाम-सुधा-रस बरसाओ।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।।
3. चित्त मेरा अति मूल मलीना, अंधकूप सम सब दुःख दीना।
अपनी ज्योति आप बखेरो, अंतर ज्योति जला जाओ।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।।
4. तन-मन में और श्वांस-श्वांस में, रोम-रोम में बस जाओ।
रग-रग में झनकार उठे प्रभु अंतर बीन बजा जाओ।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।।
5. पुत्र की जीवन नैया के खवैया, भव डूबत को पार लगैया।
जीवन नैया पार लगाने, आ जाओ प्रभु आ जाओ।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।
मेरी रसना पर आओ प्रभु, मेरी जिह्वा पर आओ।
आओ-आओ नाम हरि का, मेरी रसना पर आओ।

–30–

प्रार्थना

हे मेरे प्राणनाथ गोविंद! प्रार्थना सुन लीजिए।
दीन, हीन, मलीन पर, इस बार करुणा कीजिए।।
1. मैंने लाखों जन्म गंवाए हैं, बहुतेरे पाप कमाये हैं।
हे पतितपावन! पतित को, अब शरण में रख लीजिए।
2. मैं जहाँ रहूँ, जो भी करूँ, जो भी कहूँ, जो भी सुनूँ,
सब तेरी ही आराधना हो, ऐसी कृपा कीजिए।
3. कण-कण में मैं देखूं तुम्हें, जन-जन में, मैं, निरखूं तुम्हें,
हर सांस में सुमिरूँ तुम्हें, गोपीनाथ! यह वर दीजिए।
4. गुरु वैष्णवों की सेवा करूं, और चरण-रज सिर पर धरूँ,
हे नन्दनन्दन! मेरे प्राणधन, मुझे चरणों में रख लीजिए।
5. मौत जब आवे मेरी, तब नाथ अन्तिम सांस में,
तेरा नाम उच्चारण करूँ, मुझे ऐसी शक्ति दीजिए।

यह प्रार्थना श्रील गुरुदेव की प्रेरणा से लिखी गई है। इसे हर रोज़ प्रातः उठते ही तथा रात्रि को सोते समय करने से भगवान प्रसन्न होते हैं और अपना प्रेम प्रदान करते हैं।

– अनिरुद्ध दास

–31–

अरे मन तेरी कंचन सी काया, क्षण में बीती जाय रे।
युवा-बाल-वृद्ध अवस्था बीती जाय रे।
अन्त समय सब कुछ अग्नि हो जाय रे।
अरे बीतता है काल हाय-धाय करने में,
ज़िन्दगी बीत जाएगी रोने-धोने में।

तू तो बेहोशी में है, तुझको पता नहीं चलता,
हर सांस तेरा कीमती जो है निकलता।
मायाजाल में भटक रहा है,
अमूल्य घड़ी बातों में टल जाय रे।
तेरे अनमोल सांस का हिसाब क्या होगा ?
मानुष जन्म पाकर भी तेरा जवाब क्या होगा ?
जीवन क्षणिक भरोसा क्या है ?
जैसे पानी की बूंद मिट्टी में मिल जाय रे।
अनिरुद्ध का कहना मान, नहीं अंत में पछताय रे।

–32–

श्रीगुरुदेव प्रार्थना

जै गुरुदेव, जै गुरुदेव, जै जै जै मेरे गुरुदेव
आप जानो मेरा दिल का भेव
साधन भजन होता नहीं, आपसे कहता सही,
कैसे होगा निस्तार, नैया पड़ी मँझधार,
जन्म जन्म का मैं हूँ तुम्हारा, मैंने जीवन तुमपे हारा,
अपनापन निभावो, अब तो मुझे न तरसावो,
बुढ़ापा आ गया है, कमज़ोरी ला गया है।
तन में बल नहीं, मन में उत्साह नहीं, बुद्धि-अक्ल नहीं,
पंगु बना दिया है, मैं हो गया चरणों से दूर।
आप ही बतावो, कैसे आऊँ ? मैं तो हूँ मजबूर,
आप ही आ जावो, मेरा जीवन सफल बनाओ।

अन्त समय अब मेरा है, जाने का सवेरा है,
काल आ रहा है, सिर पर मंडरा रहा है,
न जाने कब निगल जावे, पता भी न हो पावे।
अन्त समय में आ जाना, मुझे हरिनाम सुना जाना,
मेरा आवागमन हटा जाना, मुझे कृष्ण-चरण पहुँचा जाना।

–33–

कंचन, कामिनी तजो मेरे भाई।
कृष्ण कन्हैया को निश्चय पाई।
क्यों भटक रहे हो, दुःख के सागर।
नाम जपन में बैठो आकर।
सारी आफत तेरी मिट जाई।
जन्म जन्म के तुम हो चाकर।
अपना लेंगे कान्हा आकर।
सदा तेरा दुःख मिट जाई।
यह संसार तो है स्वार्थ का साथी।
कोई नहिं है यहाँ सच्चा नाती।
सच्चा साथी कृष्ण कन्हाई।

–34–

हे दयानिधि! निताई-गौर, अवनी पर फिर अवतार हो जावे।
तो पामर अपराधी जीवों का, फिर से उद्धार हो जावे।।
इन दुःखी जीवों को, अपना लो हरि, अपने हाथों से।
इसमें संशय नहीं, पापियों का, जीर्णोद्धार हो जावे।।
अर्पित कर के बैठे हैं, दिल रो-रो कर ये कहते हैं,
किसी भी सूरत में आपसे प्यार हो जावे।

सुना दो 'हरि बोल' का नारा, गिरा दो विषयों का पारा,
सुनकर मस्त हो जावें, खुलकर आपका इंतज़ार हो जावे।
डूबे जो भव सिंधु-सागर में, किसी तरह उद्धार हो जावे।
दयालु! तुम सहारा दो, जिससे बेड़ा पार हो जावे।
अनिरुद्ध रो कर कहता है, हरि का फिर से अवतार हो जावे।

-35-

नाम भगवान् का दीवाना बना देता है।
मस्ती में घूमती दुनियाँ को, पागल बना देता है।
क्षण-क्षण मन मस्त रहता है, धूल में रंगा रहता है,
शौच का, न मूत्र का, पता रहता है, पागल की तरह रोता रहता है।
जो उस सांवरे को ढूंढता है, सांवरा भी उसे ढूंढता है,
जिसे ढूंढने का मज़ा आ गया, वह इस ढूंढने में अमृत ढूंढता है।
वो तुझमें है! तू उसे कहाँ ढूंढता है?
दूर है उससे वह, जो उसे दूर ढूंढता है।
अज्ञान का परदा है उस पर, जो उसे दूर ढूंढता है।

-36-

बंशी बजा दो, मुरली की बैन,
पड़त ना पल छिन चैन।
लगी है लगन, दिल ही और हो बैठा,
न भूख प्यास है, जीने से हाथ धो बैठा।
एक बार छवि-रस जो पी जाओ,
तो शक नहीं, मरता हुआ भी जी जाओ।
दहकता दिल दिन-रैन, बजा दो मुरली की बैन।
जो प्राण जाना चाहें, तो इस तरह जायें!

कि मेरे सामने करुणानिधान आ जायें!
कहूँ मैं उनसे, कि सर्वस्व दे चुका तुमको,
तो कहे बाप! मैं शरण ले चुका तुमको,
सुने ये अमृत से भरै बैन।
बजा दो बंशी की बैन।

-37-

सहारा लो हरिनाम का, अमृत समझकर।
पी लो कान से, मन को सटाकर।
आठों याम हरिनाम को जपाकर,
आनन्दमय गुज़रेगा जीवन सजाकर।
इसी जप से कभी संकट न आता,
पापों की वृत्ति जड़ से उखड़ जाता।
इसी जप से विरह-आनन्द होगा,
इसी जप से सन्तों से प्यार होगा।
इसी जप से संसार असार होगा,
इसी जप से शान्ति का विस्तार होगा।
यही जप माता, पिता व भाई,
क्यों न पुत्र बनकर, कर लो कमाई।
अनिरुद्ध शिशु का रिश्ता बनाकर,
अपराध न होगा करे जो अघाकर।

-38-

अनन्त कोटि सन्तजन, अनन्त कोटि भक्तजन,
अनन्त कोटि रसिकजन, अनन्त कोटि गुरुजन,
मैं तो आपका जन्म-जन्म, चरणों की मैं धूल कण।

निभा लो अब तो अपनापन, दिला दो मुझे कृष्ण-चरण,
यदि अपराध मुझसे हो गए, आपके चरणबिन्दु में।
जान व अनजान में, इसी जन्म या किसी जन्म में,
क्षमा करो मेरे गुरुजन, मैं तो आपका जन्म-जन्म।
कहाँ जाऊँ मैं छोड़ चरण? कोई ठिकाना है नहीं!
चरणों में राखो अब तो, कोई बहाना है नहीं,
अनिरुद्ध दास को अपनाकर सफल करो मेरा जीवन।

-39-

हे कृष्ण प्यारे! अपने दर से ना टालो।
इस शिशु का इकरार, मुझसे लिखा लो।
मैं आपका, आप हैं जो मेरे माता-पिता।
ये झूठा संसार बस आपसे ही रिश्ता।
रिश्ता निभावोगे न, तो क्या देखोगे पिसता।
गोपियों ने कौन सा सत्संग किया था?
फिर भी कृष्ण उनके पीछे-पीछे फिरा था।
केवल अहम् को कृष्ण-चरणों में चढ़ाया।
आठों याम श्याम को दिल में बिठाया।
घर में ही रहकर सब कारज निभाया।
न जप-तप किया, केवल आंखों से आंसू बहाया।
अनिरुद्ध दास जो तेरा शिशु कहाया।

-40-

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो वृन्दे महारानी,
तेरी कृपा बिना, आनी न जानी, गोविन्द कछु न मानी।
तू तो है गोविन्द दीवानी, सदा रहे तू मस्तानी,
तू गोविन्द की, गोविंद तेरा, हरि-चरण लगा मन मेरा।

हृदय में विरह आग लगा दो, मेरा जन्म सफल करा दो,
जन्म-जन्म का दास तुम्हारा, जीवन मैंने तुमपे हारा।
जीवन मेरा सफल करा दो, आवागमन का दु:ख मिटा दो।
अर्थ ना चाहूँ, काम न चाहूँ, ना चाहूँ मैं धर्म और मोक्ष,
अनन्त जन्म से भटक रहा हूँ अब तो कर दो मुझको होश।
जिसपे तेरी कृपा हो जावे, जन्म सफल उसका हो जावे।
कृष्ण-चरण वह निश्चय पावे, आनंद-सिंधु में डुबकी लगावे,
अनिरुद्ध की विनती सुनकर, सिर पर हाथ रख अपनावे।

-41-

भजन करना हो तो, अपराध से बचो।
यदि अपराध बन गया है, तो सन्तन में बसो।
सन्तन के चरण का जल, अज्ञात में पीवो।
रज चरनन की छुपकर, तन में कसो।
झूठा महाप्रसाद छुपकर, जीभ से चखो।
ये तीन बल अपराध को नसावें।
अपराध होने पर भी भजन को बढ़ावें।
प्रत्यक्ष में आजमाकर देखो तो सही।
क्या गुल खिलता है, अश्रु निश्चय ही बही।
क्षमा होता है अपराध, यह सत्य बात सही।
शास्त्र बोल रहा है, यह झूठा लेख नहीं।
अनिरुद्ध ने अपनाया, तो ये भक्तों को कही।

–42–

अनुभूति

अगर अनिरुद्ध प्रभुजी न इस जग में आते!
तो हम जैसे पापी कहाँ पार जाते!
हरिनाम की कौन महिमा सुनाता!
विरहा की अग्नि, हम कैसे जलाते?
न अश्रु-पुलक होता, न आनंद होता,
'हरिपद' ये जीवन, व्यर्थ ही गँवाते।

♦ ♦ ♦

महामंत्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे।।
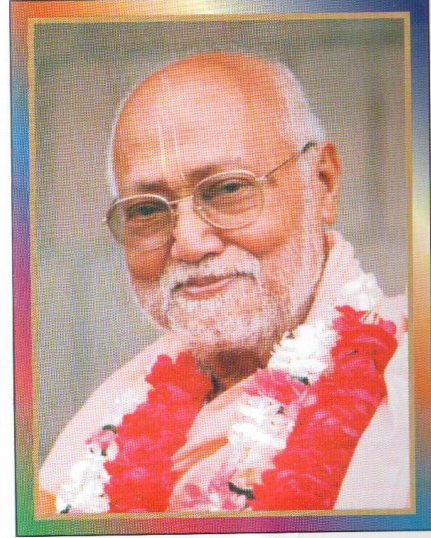
ॐ विष्णुपाद 108 श्रील
भक्तिवल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
(अखिल भारतीय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ संस्थान के वर्तमान आचार्य)
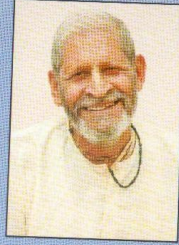
।। हरे कृष्ण ।।

अनिरुद्ध दासाधिकारी

परमभागवत, श्रीहरिनामनिष्ठ, श्रीपाद अनिरुद्धदासाधिकारी प्रभु जी ने श्रीगुरुपादपद्म की अहैतुकी कृपा और भगवत् प्रेरणा से श्रीहरिनाम पर छः सौ से भी ज्यादा पत्र लिखकर, संसारी जीवों के लिए महान उपकार का कार्य किया है। श्रीहरिनाम संकीर्तन तथा श्रीकृष्ण प्रेम प्रदान करने वाले, नन्दनंदन श्रीकृष्ण के अवतार श्रीचैतन्य महाप्रभु के परम प्रिय तथा अपने श्रील गुरुदेव, परमाराध्यतम नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज के विशेष कृपापात्र, प्रतिदिन तीन लाख हरे कृष्ण महामंत्र –

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

का जप करने वाले, श्रीमद् अनिरुद्ध दासाधिकारी प्रभु जी द्वारा श्रीहरिनाम के बारे में, त्रिदण्डिस्वामी श्री श्रीमद् भक्तिसर्वस्व निष्किंचन महाराज जी को लिखे गये दिव्य पत्रों पर आधारित है यह ग्रंथ –

एक शिशु की विरह वेदना